



Knowledge Consortium of Gujarat

Department of Higher Education - Government of Gujarat

Journal of Humanity

ISSN: 2279-0233

Year-2 | Continuous issue-11 | March-April 2014

स्त्री के एकाँकी जीवन की पीड़ा की सक्षम अभिव्यक्ति : 'अकेली'

3 अप्रैल 1931 के दिन जन्मी मन्नू भण्डारी का आधुनिक लेखिकाओं में महत्वपूर्ण स्थान है। अपनी रचनाओं में मन्नूजी ने बृहत्तर सामाजिक आयामों की व्यापक जीवनदृष्टि प्रस्तुत की है। जिसके अंतर्गत उन्होंने बदलते मूल्यों, टूटते संबंध, एकाकीपन, कुण्ठा, तनाव, अन्तद्वन्द से ग्रस्त मानव की मानसिकता एवं संवेदना को मर्मस्पर्शी ढंग से प्रस्तुत किया है।

नारी होने के नाते नारी की व्यथा को मन्नूजी ने अपने नारी पात्रों में साकार किया है। प्रायः प्रत्येक समाज में सादियों से स्त्री को सामाजिक सुविधा के एक साधन के रूप में अधिक प्रयोग में लिया गया है। मन्नूजी ने अपनी कहानी 'अकेली' में सोमा बुआ के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि हमारी इस सामाजिक व्यवस्था में सोमाबुआ जैसी अनेक स्त्रीया अकेलेपन की पीड़ा को जेल रही हैं।

कहानी की शुरुआत में हम देखते हैं कि सोमा बुआ के जवान बेटे की मौत हो जाने से उनके पति आघात सहन न कर पाने के कारण घर-बार छोड़कर तीर्थवासी हो जाते हैं और सोमा बुआ अकेली हो जाती हैं। पिछले बीस साल से सोमा बुआ एकाकी जीवन व्यतीत कर रही हैं। उनके तीर्थवासी पति हर साल एक महीने के लिए घर आकर रहते थे, पर पति के आने से सोमाबुआ का मन और भी मुरझाया हुआ रहता था। क्योंकि-"पति के स्नेहहीन व्यवहार का अंकुश उनके रोजमर्रा के जीवन की अबाध गति से बहती स्वच्छंद धारा को कुंठित कर देता। उस समय उनका घूमना-फिरना, मिलना-जुलना बन्द हो जाता और सन्यासीजी महाराज से तो यह भी नहीं होता कि दो मीठे बोल-बोलकर सोमा बुआ को ऐसा सम्बल ही पकड़ा दे, जिसका आसरा लेकर वह उनके वियोग के ग्यारह महीने काट दे।"1 अपनी ऐसी स्थिति में सोमा बुआ को अपनी जिन्दगी पास-पड़ोसवालों के भरोसे ही काटनी पड़ती थी। किसी के घर मुंडन हो, छठी हो, जनेऊ हो, शादी हो या गमी; बुआ पहुँच जाती हैं और फिर वहाँ अपने घर की तरह काम करती हैं।

किशोरीलाल के यहाँ उनके बेटे का मुंडन था। सोमा बुआ बिना बुलावे के चली जाती हैं, इस पर उनके सन्यासी पति के साथ कहा-सुनी हो जाती है। राधाभाभी बुआ को समजाती हैं कि-"अरे रोती क्या हो बुआ! कहना-सुनना तो चलता ही रहता है। सन्यासीजी महाराज एक महीने को तो आकर रहते हैं, सुन लिया करो, और क्या?"2 राधाभाभी को जवाब देते हुए बुआ रोते हुए बताती हैं कि "सुनने को तो सुनती हूँ पर मन तो दुखता ही है कि एक महीने को आते हैं तो भी कभी मीठे बोल भी नहीं बोलते।"3 पूरे सालभर पास-पड़ोसवालों के सहारे जिन्दगी बितानेवाली बुआ एक महीने के लिए घर आये अपने सन्यासी पति से दो मीठे बोल के लिए तरसकर रह जाती हैं।

सोमा बुआ अपने जवान बेटे हरखू का असमय निधन हो जाने के कारण बुआ दूसरों के बेटों को अपना बेटा मानकर मन मनाती हैं -"मेरे लिए जैसा हरखू वैसा किशोरीलाल! आज हरखू नहीं है इसी से दूसरों को देख-देखकर मन भरमाती रहती हूँ।"4 इतना कहते-कहते बुआ हिचकिया लेने लगती हैं।

कई सप्ताह बाद बुआ को यह खबर मिलती है कि उनके देवरजी के ससुरालवालों की किसी लड़की का सम्बन्ध उनके गाँव के भागीरथजी के यहाँ हुआ है और जल्द ही शादी का मुहूर्त आनेवाला है। बुआ को यह आशा है कि उनके देवर के समधी (रिश्तेदार) हैं तो उनको भी बुलावा जरूर आयेगा। बुआ उस शादी में जाने के लिए उत्साहित हो जाती हैं। समधी की लड़की को क्या उपहार दिया जाय उसके लिए बुआ पड़ोशवाली राधाभाभी के साथ विचार-विमर्श करती हैं और पूछती हैं कि -"क्यों री राधा, तू तो जानती है कि नई फैशन में लड़की की शादी में क्या दिया जावे है? समाधियों का मामला ठहरा, सो भी पैसेवाले। खाली हाथ जाऊँगी तो अच्छा नहीं लगेगा। मैं तो पुराने जमाने की ठहरी, तू ही बता दे क्या दे दूँ? अब कुछ बनाने का समय तो रहा नहीं, दो दिन बाकी हैं सो कुछ बना-बनाया ही खरीद लाना।"5 इस शादी में उपहार देने के लिए बुआ अपने पास जो जमा पूँजी थी वह निकालती हैं। बुआ का अनुमान था कि रुपये ज्यादा निकलेगा, लेकिन सिर्फ सात रुपये ही निकलते हैं तब बुआ अपने मृत पुत्र की एकमात्र निशानी अँगूठी को बेचकर समधी की लड़की के लिए उपहार लाने का निश्चय किया और राधाभाभी से बोली -"तू तो बाजार जाती है राधा, इसे बेच देना और जो कुछ ठीक समझे खरीद लाना। बस, शोभा रह

जावे इतना खयाल रखना |”6 राधाभाभी उपहार की चीजे लाकर सोमा बुआ को दे देती है |

सोमा बुआ अपना एकाकीपन भूलाने के लिए अपने देवर की समधिनि की लड़की की शादी मे जाने के लिए जी-जान से तैयारी करती है। बुआ अंत समय तक इंतजार करती रहती है लेकिन ऐन मौके पर कोई बुलावा नहीं आता। राधाभाभी के पुछने पर एकदम सतर्क हो जाती है और अपने से ही बोलती हो ऐसे राधा से पूछती है कि –”पर सात कैसे बज सकते है, मुहरत तो पाँच बजे का था |”7 और अंत: सोमा बुआ अकेली ही रह जाती है |

नारीवाद, स्त्रिसशक्तिकरण के आधुनिक युग मे आज भले ही देश के राष्ट्रपति पद से लेकर लोकसभा अध्यक्ष तक, अवकाशयात्री से लेकर कॉर्पोरेट विश्व तक के पद को शोभायमान किया हो,पर ऐसी स्त्रीया कितनी है? यह एक सोचनीय सवाल है। आज भी भारतीय समाज मे अधिकांश नारिया अपने जीवन मे अनेक दृष्टियों से उपेक्षित है, जिसमे से अकेलापन एक है जिसे प्रस्तुत कहानी मे मन्नूजी ने सोमा बुआ के माध्यम से व्यक्त किया है |

संदर्भ संकेत:

1. कथा-कुसुम-डॉ. भरत पटेल -पृष्ठ-184
2. कथा-कुसुम-डॉ. भरत पटेल -पृष्ठ-186
3. कथा-कुसुम-डॉ. भरत पटेल -पृष्ठ-186
4. कथा-कुसुम-डॉ. भरत पटेल -पृष्ठ-187
5. कथा-कुसुम-डॉ. भरत पटेल -पृष्ठ-188
6. कथा-कुसुम-डॉ. भरत पटेल -पृष्ठ-189,90
7. कथा-कुसुम-डॉ. भरत पटेल -पृष्ठ-192

डॉ. कपिला मंगलदास पटेल

आसिस्टेंट प्रोफेसर,

आइ.आइ.टी.ई., गांधीनगर, गुजरात.